

इस्लाम मे परवरशि (2 का भाग 2)

रेटगि:

वविरण: ?????? ???? ?? ??? ????? ?? ??? ?? ?????-???? ?? ????????? ??? ?????? ?? ?????? ???

श्रेणी: [पाठ](#) , [सामाजकि बातचीत](#) , [मुस्लमि समुदाय](#)

द्वारा: Abdurrahman Murad (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

उद्देश्य:

·यह जानना कअिच्छी परवरशि गर्भावस्था से पहले ही शुरू हो जाती है।

·यह जानना कअिच्छी परवरशि की जम्मेदारी माता-पति दोनों की होती है।

·बच्चों को अच्छा नाम देने का महत्व।

अरबी शब्द

·?????? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, कयिा या करने को कहा।

·??? - याचना, प्रार्थना, अल्लाह से कुछ मांगना।

अच्छे साथी बनाना

एक मजबूत परिवार बनाने के लिए अच्छे दोस्तों का होना अनविर्य है। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा:

“व्यक्तअपने साथियों से प्रभावति होता है, इसलिए उसे ध्यान रखना चाहिए कविं कसिं साथी बनाता है।”[\[1\]](#)



यह माता-पति और बच्चों दोनों के लिए सच है। बच्चे अपने आसपास के लोगों से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं; अगर माता-पति अच्छी संगत में रहेंगे, तो यह बच्चों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। पश्चिमी देशों में तो यह बिल्कुल अनविरय है, क्योंकि किसी के प्रति अपनी विचारधारा और व्यवहार में इस्लाम वरिधी हो सकते हैं, इसलिए माता-पति को यह स्पष्ट होना चाहिए कि अच्छी संगत रखने और बुरी संगत से बचने से उनके बच्चों को यह अंतर करने में मदद मिलेगी कि क्या अनुमेय है और क्या नहीं है। इससे बच्चों को यह समझने में मदद मिलेगी कि हालांकि ऐसे लोग हैं जो शराब पीते हैं या गैरकानूनी काम करते हैं, लेकिन ये अच्छी चीजें नहीं हैं और इसके वैध विकल्प हैं।

माता-पति को भी अपने बच्चों के लिए अच्छा साथी और दोस्त चुनने में सक्रिय होना चाहिए। अगर बच्चे अपने दोस्तों को घर लाना चाहते हैं, तो इसकी अनुमति देना बुद्धिमानी होगी, ताकि माता-पति देख सकें कि वे कौन हैं और वे अपने बच्चों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ जाएं।

अल्लाह से दुआ

महान अल्लाह कहता है:

“...मुझीसे प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूंगा...” (कुरआन 40:60)

एक माता-पति अपने बच्चों के लिए जो सबसे बड़ा काम कर सकते हैं वो है अपने बच्चों की सफलता के लिए अल्लाह से प्रार्थना करना। माता-पति की दुआ को अल्लाह स्वीकार करता है। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा:

“इसमें कोई संदेह नहीं कि अल्लाह तीन दुआएं स्वीकार करता है, जसिने गलत काम किया है उसकी दुआ, यात्रा करने वाले की दुआ और बच्चों के लिए उनके माता-पति की दुआ।”[2]

अब तक हमने उन प्रमुख बद्दुओं पर चर्चा की है जो हर माता-पति को ध्यान रखना चाहिए। अब हम एक ऐसे कदम पर चर्चा करेंगे जो उतना ही महत्वपूर्ण है, लेकिन एक ऐसा कदम है जो एक परिवार बनाने से पहले आता है।

जीवनसाथी चुनना

पश्चिमी देशों में एक सफल परिवार बनाने की दिशा में यह सबसे महत्वपूर्ण कदम है। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा:

“अपना परिवार शुरू करने के लिए सबसे अच्छा जीवनसाथी चुनो।”[3]

पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने यह भी समझाया कि 'सर्वश्रेष्ठ' जीवनसाथी कौन है। उन्होंने समझाया कि सबसे अच्छा जीवनसाथी वह है जो धार्मिक रूप से प्रेरित हो और उसका चरित्र अच्छा हो। उन्होंने कहा:

“महिलाओं से शादी चार चीजों के लिए की जा सकती है: उनकी संपत्ति, उनका वंश, उनकी सुंदरता और उनकी धार्मिक प्रतबिद्धता। उसे चुनो जो धार्मिक रूप से प्रतबिद्ध हो, ताकि तुम्हारे हाथ धूल से सने (अर्थात, तुम समृद्ध हो)।”[4]

इन दो कथनों से यह स्पष्ट है कि एक मुसलमान को एक अच्छा जीवनसाथी चुनना चाहिए; यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए है।

यदि केवल सांसारिक मामलों के आधार पर चुना जाता है, तो एक अच्छा परिवार बनाने के मामले में वह रश्िता फलदायी नहीं होगा।

पति और पत्नी दोनों को विवाह के प्रारंभिक चरण से आगे देखना चाहिए कि परिवार के लिए क्या आने वाला है? विवाह के इस बंधन से जो वातावरण बन रहा है, वह एक अच्छे परिवार बनाने में किस प्रकार सहायक होगा? यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका उत्तर दिया जाना चाहिए। अच्छे से काम करने वाले रश्िते में, दोनों पति-पत्नी एक अच्छा मुस्लिम परिवार बनाने के लिए मिलकर काम करते हैं। यह एक बड़ी ज़िम्मेदारी है; ऐसी ज़िम्मेदारी जैसी पैगंबर ने अपने शब्दों के माध्यम से स्पष्ट रूप से बताया, उन्होंने कहा:

“आप में से हर कोई ज़िम्मेदार है उसके लिए जो आपकी देखरेख में है। एक राष्ट्र का सरदार उन लोगों के लिए ज़िम्मेदार होता है जो उसकी देखरेख में होते हैं; एक आदमी अपने परिवार के लिए ज़िम्मेदार है; एक महिला उन लोगों के लिए ज़िम्मेदार है जो उसकी देखरेख में है।”[5]

कई बुनियादी तौर-तरीके हैं जो दोनों पति-पत्नी के रश्िते की शुरुआत में महत्वपूर्ण हैं; जब इनका पालन किया जाता है, तो यह उनके लिए उनके जीवन में एक अच्छी शुरुआत सुनिश्चित करता है। पैगंबर ने हमें ऐसा ही एक तरीका बताया है, एक पति को अपनी नई दुल्हन के माथे पर हाथ रखकर कहना चाहिए:

“ऐ अल्लाह, मैं आपसे इसकी अच्छाई मांगता हूँ, वो अच्छाई जो उसके स्वभाव में है और मैं इसकी बुराई से आपकी शरण चाहता हूँ, वो बुराई जो उसके स्वभाव में है।”[6]

कई अन्य बुनयादी तरीके हैं जन्हें पति और पत्नी दोनों को सीखना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए।

बच्चे

एक अच्छा जीवनसाथी चुनने के महत्वपूर्ण चरण के बाद, पति और पत्नी दोनों को एक अच्छा परिवार बनाने के लिए सुन्नत में वर्णित तरीकों को अपनाना चाहिए।

पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा:

“नश्चय ही तुम न्याय के दिन अपने नाम और अपने बाप-दादा के नाम से बुलाए जाओगे, इसलिए (अपने बच्चों के लिए) अच्छे नाम चुनो।” [7]

आज के समय में हमारे बच्चों को दिए जाने वाले कुछ नाम अशुभ होते हैं! कभी-कभी, माता-पिता अपने बच्चों के लिए गैर-मुस्लिम हस्तियों के नाम चुनते हैं, या वे अपनी संस्कृति में ही ऐसे अजीब 'अद्वितीय' नाम चुनते हैं जिनकी सांस्कृतिक जड़ होती है।

किसी व्यक्ति को दिया गया नाम उसकी परवरिश पर गहरा प्रभाव डालता है; ऐसे नामों से बचना चाहिए जिसका अर्थ बुरा हो या नकारात्मक हो। पैगंबर ने हमें नाम चुनने के बारे में बहुत स्पष्ट निर्देश दिए हैं। पैगंबर ने बताया; उन्होंने एक बार अपने एक साथी जैद अल-खाइल का नाम बदल कर जैद अल-खैर रख दिया; खाइल का अर्थ है घोड़े जबकि खैर का अर्थ है अच्छाई। उन्होंने अपने साथियों को भी सक्रिय रूप से निर्देश दिया कि वे अजीब अर्थ वाले नामों का उपयोग करने से बचें। यह सलाह बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर स्कूलों में बढ़ती हुई बदमाशी को देखते हुए। यद्यपि अच्छा नाम चुना जाता है, तो यह बच्चे को उस नकारात्मक कारक से बचाएगा जिसका सामना उन्हें स्कूल में करना पड़ सकता है।

पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने हमें यह बताते हुए निर्देशित किया:

“अल्लाह के सबसे प्यारे नाम अब्दुल्ला और अब्दुर-रहमान हैं।” [8]

अब्दुल्ला का अर्थ है 'अल्लाह का दास' और अब्दुर-रहमान का अर्थ है 'सर्वाधिक लाभ पहुंचाने वाले का दास'।

छोटी-छोटी बातों को न भूलें

माता-पति को बच्चों के विकास के प्रत्येक चरण का बारीकी से नगिरानी करना चाहिए; जैसे-जैसे वे बढ़ते हैं, उन्हें आवश्यक कौशल सिखाना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब बच्चे छोटे होते हैं, तो बच्चों को उचित शिष्टाचार और तौर-तरीके सिखाना चाहिए। बाद में, उन्हें एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने का कारण बताना चाहिए। इस स्तर पर बताई गई कहानियां शायद ही कोई कभी भूल पाता है।

बच्चों को दुआ और कुरआन भी याद करने को कहना चाहिए। यदि उन्हें इन 'छोटी-छोटी चीजों' के साथ पाला जाए, तो वे निश्चित रूप से अपने जीवन में सबसे स्वस्थ तरीके से आगे बढ़ने में सक्षम होंगे।

फुटनोट:

[1] ??? ???? ?

[2] ???? ???? ?

[3] ???? ??-???? ?

[4] ???? ??-???????, ???? ??????? ?

[5] ???? ??-???? ?

[6] ??? ???? ?

[7] ??? ???? ?

[8] ???? ??-?????? ?

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/221>

